Paper III

ऐहोल मंदिर

Q.→ (15) Discuss the architecture feature of Temple at Aihole. ?

Ans:→ प्राचीन भारतीय मंदिर के इतिहास में ऐहोल का मंदिर महत्वपूर्ण स्थान रखता है। दक्षिण भारत में मंदिर स्थापत्य के आरंभ के उदाहरण मैसूर के बीजापुर जिले के अन्तर्गत ऐहोल के पाषाणनिर्मित मंदिर में मिलते हैं। यदि गंभीरता पूर्वक विचार किया जाय तो प्रकट होता है कि उत्तरी भारत की नागर शैली का विस्तार कृष्णा-तुंगभद्रा घाटी में भी हुआ। नागर शैली के इस विस्तार के भी दो उपविभाग किए जा सकते हैं। सबसे प्रथम विस्तार कृष्णा-तुंगभद्रा घाटी में हुआ जहाँ द्राविड़ शैली के साथ ऐहोल के मंदिर पट्टदकल तथा आलमपुर की स्थापत्य कला नागर रीति के साथ संपन्न हुई है। यही दोनों शैलियों का संगम मिलता है। खानदेश के समीपवर्ती भू-भाग में भी नागर शैली की इमारतें वर्तमान हैं। दोनों शैलियों की विशेषताएँ तथा तत्वों के सम्मिश्रण से चालुक्य शैली का जन्म हुआ। यही आगे चलकर एक स्वतंत्र एवं शक्तिशाली शैली के रूप में सामने आता है। बीजापुर जिले का ऐहोल नामक स्थान इमारतों का संग्रहालय है जिसमें कुछ उसके प्राचीन गौरव को बतलाती है जिससे इन मंदिरों का निर्माण कराया था। संभवतः आर्यन शिखर (नागशैली) का प्रभाव दक्षिण पहुँचा। इसी कारण ऐहोल के मंदिरों में मिश्रित शैली मिलती है। इस स्थान के सत्तर मंदिरों में नागर स्थापत्य के विचार अनेक इमारतें में प्रकट हो रहे हैं। ऐहोल के मंदिर को चालुक्य स्थापत्य कला का जन्मदाता कह सकते हैं। ऐहोल के मंदिरों के गर्भगृह त्रिरत्न योजना पर बने हैं। उस पर छोटा शिखर है और मंदिर के सामने के भाग में स्तंभयुक्त कमरा है। नागर शैली के प्रारंभिक शिखर की रूप रेखा ऐहोल के मंदिरों में वर्तमान है।

ऐहोल में स्थापत्य कार्य का उत्साहवर्द्धक आरंभ हो सदियों तक चलता रहा। बादामी से सौलह किलोमीटर दूर पट्टदकल में आज भी मंदिरों का जमघट है। इनमें कई मंदिर उत्तरी यानी नागर वस्तु शैली के हैं जो पाँचवी सदी में बने थे। शेष मंदिर दक्षिण शैली के हैं। इनमें सातवी सदी में निर्मित नागर शैली के पापनाथ मंदिर का नाम लिया जा सकता है। यह स्थापत्य कला में अन्य मंदिरों से उत्तम तथा प्रभावोत्पादक है। पापनाथ का मंदिर

विशाल ठोस चट्टानों से निर्मित हैं दीवारें एवं स्तंभ विशालकाय दीख पड़ते हैं। इसके 50 वर्ष बाद निर्मित संगमेश्वर तथा विरुपाक्ष के मंदिर द्राविड़ शैली के महत्वपूर्ण नमूने हैं। काशी विश्वनाथ के मंदिर का भी उल्लेख करना आवश्यक है। इस प्रकार के मंदिर में गर्भगृह त्रिरत्न योजना सहित बनाया गया जिसके ऊपरी भाग में शिखर विद्यमान है। यह सभी ऐहोल तथा उत्तरी भारत के स्थापत्य मंदिरों के नमूनों के समान है। दक्षिण भारत में आरंभिक शिखर शैली में आमलक भी दीख पड़ते हैं। पट्टदकल के पाप नाथ मंदिर में एक प्रदक्षिणा मार्ग है। जिससे संबद्ध दो प्रकोष्ठ हैं। एक को अंतराल तथा दूसरे को सभा मंडप कहा जा सकता है। गर्भगृह की छत चिपटी है जिसके ऊपर शिखर स्थित है। अन्य बनावट तथा तत्वों को ध्यान में रखकर यह कहना यथार्थ होगा कि नागर शैली की मीनार को छोड़कर समान आकार द्राविड़ रीति के विरुपाक्ष मन्दिर के सदृश हैं। संगमेश्वर मंदिर में दक्षिण वास्तुकला का रूप दीखते हैं। तुंगभद्रा के पश्चिमी किनारे पर आलमपुर में छह मंदिरों का समूह है। जो पापनाथ से मिलता जुलता है। दक्षिण भारत में नागर वास्तुकला के विस्तार में शिखर की प्रधानता है जो स्थानीय अन्य आकार प्रकार से उसे पृथक करता है। इसमें मुख्य मीनार के साथ अंग शिखर की आवश्यकता का अनुभव इस रूप से भी नहीं किया गया। परन्तु उड़ीसा तथा दक्षिण की नागर शैली में मुख्य शिखर स अंगशिखर को गौण स्थान दिया गया है। इस कारण कलाओं में अंगशिखर अप्रधान हो गए और स्वतंत्रता खो बैठे। स्टैला क्रामरिश इस आकार को संशोधित रूप मानती हैं जिसमें दोनों को मिश्रित करने का सफल प्रयत्न किया गया। इसमें एक की ऐसी प्रधानता दी गई कि शिखर की अन्य छोटी प्राकृतियाँ बाधा नहीं उपस्थित कर सकीं। मंदिरों में उत्कृष्ट इमारत के निचले भाग में स्थित रहते हैं। दक्षिण के शिखर के साथ इसका बिल्कुल रूप निचली वर्ग सिरा से सीधे मीनार के ऊपरी भाग तक एक सीधा में पहुँच जाता है। इसकी विशेषता यह हो जाती है कि इस गुंबद पतिकृति की नई परिधि के भीतरी सारी इमारत तैयार हो गई है। उसके बाहर कोई भी बनावट नहीं दीख पड़ती। ऐसा दीख पड़ता है कि उपांग एक सांचे में जुड़े हैं। उनका पृथक अस्तित्व रही है इस कारण वे मुख्य मीनार से अलग नहीं किए जा सकते। सिरे पर आमलक शिला के समीप सभी पंक्तियाँ मिल जाती हैं

साधन माला में इसकी स्तुति की गई है। तथा आर्य अवलोकितेश्वर के नाम से उल्लेखित है। प्रारम्भ में आठवीं शती के पश्चात तंत्र या मंत्र में हिन्दू धर्म के प्रति ईर्ष्या और द्वितीय भावना जाग्रत हुई। साधन माला में अनेक स्तुति न मिलते हैं कोई कलाकारों से हिन्दू देवता को पद-दलित करने का कार्य किया है। इन मत में हरी-हरीवाहन लोकेश्वर पहला उदाहरण प्रस्तुत किया है। हिन्दू कला में इसकी प्रतिक्रिया नहीं दिख पड़ती है। भारत में इस नाम की प्रतिमा उपलब्ध नहीं है। नेपाल से लोकेश्वर की धातु की प्रतिमा मिली है। अतएव यह अनुमान लगाना उचित हो गया है कि भारत से ही इसकी धारणा नेपाल पहुंची है।

(8) त्रैलोक्य वंशकर :-

साधन माला में इनका रंग लाल बताया गया है और आसन वज्रप्रसंग है। ढाका के पास इसकी एक प्रतिमा मिली है। इससे मालूम पड़ता है की इस लोकेश्वर के प्रतिमाए बहुत अधिक प्रसिद्ध नहीं थी। नेपाल में काँसे की मूर्ति भी मिली है।

(9) रक्त लोकेश्वर :-

इन्हे चार भुजाओं और लाल रंग का वर्णन किया गया है। साधन माला से पता चलता है कि तारा और भृकुटी इनकी शक्ति है। नेपाल और चीन में भी इसकी प्रतिमाएं मिली हैं।

(10) मायाजाल कर्म :-

साधन माला में इनके पाँच मुख और बारह हाथों का वर्णन है और बताया गया है कि इनका रंग नीला है और ये आलीढ आसन पर बैठते हैं तथा अपने बगल में समाधि मुद्रा का प्रदर्शन करता है। इनके हाथों में डमरु, खड्ग, पुष्प, वज्र, बाण, कपास आदि आयुध रहते हैं व हड्डियों का हार पहनते हैं। इनके कुछ मूर्तियां नग्न हैं जिनमें प्रत्येक अंग दिख पड़ती है और गले में मुण्ड माला है।

(11) नील कण्ठ :-

साधन माला में बताया गया है कि इनका रंग पीला है और ये वज्रप्रयोग आसन पर बैठते हैं तथा अपने बगल में समाधि मुद्रा का ~~प्रयोग करते~~ हैं। प्रदर्शन करते हैं।

(12) प्रेत संतर्पित :-

साधन माला में इनका रंग श्वेत और छः हाथों का वर्णन मिलता है।

(13) सुखवती लोकेश्वर :-

साधन माला में इनका रंग काला, के अनुसार और तीन मुखो का वर्णन मिलता है। ये ललितासन में बैठते हैं इनके बहुत से मूर्तियाँ नेपाल से मिली है।

(14) वज्रधर :-

साधन माला में इनका रंग नीली लीये श्वेत है और वाहन मोर तथा आसन कम है। नेपाल में इनकी मूर्तियाँ मिली है।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि अवलोकितेश्वर के धारणा की तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक की जाती है। महावस्तु अवदान में बताया गया है कि अशोक के काल में महासंघिक सम्प्रदाय का उदय हुआ इसी के साथ अवलोकितेश्वर का उल्लेख है। इस ग्रन्थ में इन्हें भगवान कहा गया और बोधिसत्व का एक रूप बताया गया है। इनका कार्य था संसार के सभी लोगों को उपदेश देना और निर्माण की प्राप्ति करना। बोधिसत्व से अवलोकितेश्वर की उत्पत्ति हुई है। मध्य काल में इसकी मूर्ति बनाई गई है। सुखावती व्यूह और कारण्ड व्यूह नामक बौद्धिक ग्रन्थों में इनके विभिन्न का अंकन अजन्ता गुफा की दीवालों पर की गई है। और उनकी पहचान के लिए अभिलेख भी अंकित है।

T. [signature]
.2.02